कथा सरिता

खुदा के साथ सुरक्षित इंसान ...?

एक बार उमर ख्य्याम अपने एक शिष्य के साथ बीहड़ से गुज़र रहे थे। नमाज़ पढ़ने का समय हुआ तो दोनों ने नमाज़ पढ़ने के लिए ठीक-ठाक जगह देखनी शुरु कर दी। लेकिन तभी उन्हें कहीं दूर से आती शेर की आवाज़ सुनाई दी। उसे सुनकर शिष्ट घबरा गया और तुरंत नज़दीक के एक पेड़ पर चढ़ गया। लेकिन खय्याम तो अपने में डूबे थे। उन्होंने जैसे वह आवाज़ सुनी ही नहीं थी। वह एकाग्र होकर नमाज़ पढ़ने में लग गए। कुछ देर बाद शेर सचमुच वहां आ पहुंचा। लेकिन आश्चर्य, वह कुछ देर रुक कर चुपचाप आगे निकल गया।

उसके चले जाने के बाद शिष्य पेड़ से नीचे उतर आया। इस तरह नमाज़ खत्म होने के बाद दोनों आगे बढ़े। थोड़ी देर बाद जब उमर खय्याम को एक मच्छर ने काटा, तो उसे मारने के लिए उन्होंने अपने गाल पर ज़ोर से चपत लगाई। यह देख वह शिष्य बोला, `गुरुदेव! अभी-अभी जब शेर आपके करीब आया था, तब आप बिल्कुल नहीं घबराए, लेकिन एक मच्छर के काटे जाने पर आपको इतना गुस्सा आ गया!' खय्याम ने उत्तर दिया, `तुम कहते तो ठीक हो, लेकिन यह भूल रहे हो कि जब शेर आया था तब मैं खुदा के साथ था, जबकि मच्छर द्वारा काटे जाने के समय मैं एक इंसान के साथ था। यही वजह है कि मुझे शेर से डर नहीं लगा और मैं एक मच्छर से घबरा गया। इंसान भगवान के साथ हो तो हमेशा सुरक्षित रहता है। जबकि मनुष्य के साथ उसे कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है।' शिष्य समझ गया कि खुदा के साथ का असल अर्थ क्या है। उससे इंसान की हिम्मत बढ़ जाती है।

आधार सफलता का

पांच-छह साल का एक लड़का एक दिन अपने साथियों के साथ आम के बगीचे में चला गया। वहां सभी बच्चे आम तोड़ने लगे। लेकिन वह लड़का चुपचाप एक कोने में खड़ा रहा। साथियों के उकसाने पर भी उसने आम तो नहीं तोड़े, लेकिन इसी बीच गुलाब के पौधे पर खिले एक सुंदर फूल पर उसकी दृष्टि पड़ी। गुलाब का वह फूल देखकर उसका मन ललचा उठा। उसने चुपचाप वह फूल तोड़ लिया। ठीक उसी समय बगीचे का माली वहां आ धमका।

माली को देखकर सभी लड़के उड़न छू हो गए। लेकिन वह लड़का घबराहट में वहीं खड़ा रह गया। माली ने उसे देखते ही पकड़ लिया और पूछा, `बता, कहां है तेरा घर। चल ज़रा मैं तेरे बाबू जी से तेरी करतूत बताकर आता हूँ।' माली की यह बात सुनकर लड़का मायूस हो गया। उसने सहमते हुए धीमे स्वर में कहा, `मेरे पिताजी नहीं हैं।' लड़के का भोला-भाला चेहरा और सरल आँखें देखकर माली बड़ा प्रभावित हुआ। उसने उसे प्यार से समझाया, `फिर तो तुम्हें ऐसे काम बिल्कुल नहीं करने चाहिए, क्योंकि तुम्हें तो पिटाई से बचाने वाला भी कोई नहीं है। कभी कोई चीज़ अच्छी लगे तो उसके मालिक से मांग लेनी चाहिए। इस तरह लेना तो चोरी कहलाता है।'

लड़के को लगा जैसे माली के रूप में उसके जीवन को सही दिशा बताने वताने वाला कोई गुरु मिल गया हो। उसने तभी अच्छा इंसान बनने का संकल्प कर लिया। माली की बात को उसने ऐसे गांठ बांध लिया कि उसका जीवन एक मिसाल बन गया। यह लड़का लाल बहादुर शास्त्री था, जो आगे चलकर अपनी सच्चाई, ईमानदारी, सेवा भावना और कर्त्तव्यनिष्ठता के बल पर भारत देश के प्रधानमंत्री बनें।

गलतियां आदत न बन जायें

एक बार गोपाल राव अपने बड़े भाई गोविंद राव के साथ कबड्डी खेल रहे थे। गोविंद राव विरोधी टीम में थे। गोविंद राव कबड्डी खेलते हुए गोपाल राव के खेमे की तरफ आए और उन्होंने गोपाल राव को इशारा करके कहा कि वे उन्हें न पकड़ें और नंबर लेने दें, परंतु गोपाल राव को यह बात ठीक नहीं लगी। उन्होंने खेल को पूरी न्याय भावना के साथ खेलना उचित समझा और अपने बड़े भाई गोविंद राव को पकड़ने के लिए पूरी ताकत लगा दी। आखिरकार उन्होंने उसे पकड़ ही लिया। इस तरह गोविंद राव आऊट हो गए। यह बात गोविंद राव को अच्छी नहीं लगी और उन्होंने घर लौटने पर गोपाल राव से कहा, `गोपाल, जब मैंने तुझे मना किया था कि मुझे मत पकड़ना, तब भी तूने मुझे पकड़ ही लिया। तू मेरा कैसा भाई है रे, जो अपने बड़े भाई की इतनी सी बात भी न मान सका।' गोविंद राव की बात सुनकर गोपाल राव अपने भाई के आगे आकर बोले, `भौय्या, आपके प्रति मेरे मन में पूरी श्रद्धा है। आप जो भी कहेंगे, वह मैं अवश्य करके दिखाऊंगा, चाहे इसके लिए मुझे अपनी जान की बाज़ी ही क्यों न लगानी पड़ जाए। किंतु मैं बेईमानी नहीं कर सकता।

खेल भी हमें पूरी ईमानदारी व निष्ठा से खेलना चाहिए क्योंकि खेल-खेल में अपनायी गई भावना ही आगे हमारे विचारों व भावों को पुष्ट करती है। मैं नहीं चाहता कि बड़े होने पर मेरे अंदर झूठ बोलने या गलत कार्य करने की आदत पड़ जाए।' अपने से पांच साल छोटे भाई की इस बात को सुनकर गोविंद राव ने उसी समय अपने को सुधारने का प्रण कर लिया।

प्रसन्नता का आधार

एक दिन महात्मा बुद्ध के पास सम्राट श्रेणिक आए और उनसे पूछने लगे - `हमारे राजकुमार को हर तरह की सुविधाएं मिली हैं। बड़े आवास में रहते हैं, सेवकों की पूरी फौज है, फिर भी वे प्रसन्न नहीं रहते। दूसरी तरफ आपके ये भिक्षु हैं, ये पदयात्रा करते हैं, जैसा मिल जाता है, खा लेते हैं, जहां जगल मिल जाए, रह लेते हैं, फिर भी इनके चेहरे पर हमेशा प्रसन्नता बनी रहती है। इसका कारण क्या है?'

बुद्ध ने उत्तर दिया, `प्रसन्नता खोजनी हो तो जिसके पास कुछ भी न हो, उसमें खोजो। जिसने संकल्प करके सब कुछ छोड़ दिया, वही प्रसन्न रह सकता है। भिक्षुक कभी प्रसन्न नहीं होगा, क्योंकि उसने छोड़ा नहीं है। वह तो अभाव में ही जीवन जी रहा है। अभाव का जीवन जीने वाला कभी प्रसन्न नहीं रह सकता। चिंताएं हर क्षण घेरे रहती हैं। जिसने जान-बूझ कर छोड़ा है, वह प्रसन्न रह सकता है। दो बातें हैं - एक छोड़ना और एक छूटना। जिसे प्राप्त नहीं है, वह त्यागी नहीं। त्यागी वह है जो स्वतंत्र मन से त्याग कर दे। साधन संपन्न व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं रह सकता। उसे संपत्ति की सुरक्षा की चिंता सताती है। वह हमेशा भयभीत रहता है। अभय वही हो सकता है जिसने स्वेच्छा से त्याग किया हो।' श्रेणिक को अपनी जिज्ञासा का समाधान मिल गया। ऐसा था महात्मा बुद्ध का ज्ञान और आमजन को उनका त्याग का संदेश। हालांकि वह जीवन में मध्यम मार्ग के पक्षधर थे, किंतु वह मानते थे कि बिना त्याग के व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता। यदि अभाव है तब भी चिंता है और यदि ज़रूरत से बहुत ज़्यादा है तो भी उसकी सुरक्षा की चिंता है।

शांतिवन-आबू रोड। ब्र.कु. पूनम,इन्दौर के भव्य समर्पण समारोह के अवसर पर उनके साथ मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी व ब्र.कु. मोहिनी।

पाँवटा साहिब-हि.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् कृपाल शिला गुरुद्वारे की प्रबन्धक बलविन्दर कौर को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा।

वौद्ध-ओडिशा। 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. रामचन्द्र राउत,ए.डी.एम.ओ., ब्र.कु. पार्वती, डॉ. रामचरण प्रधान, ब्र.कु. गौरी, ब्र.कु. सरोज व अन्य।

खंडपडा-ओडिशा। आध्यात्मिक स्नेह मिलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए पूर्व एन.ए.सी. किशोर दास। साथ हैं ब्र.कु. गीता, लेक्चरार जगदीश महापात्र व डॉ. गोपबंधु।

खानपुर-राज.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान सरपंच ललित राठौर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. तपस्विनी।

रावट्सगंज। योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत डॉ. अर्जुन दास केशरी, डॉ. ओम प्रकाश त्रिपाठी, चेयरमैन कृष्ण मुरारी गुप्ता, सभासद यादवेन्द्र दत्त व ब्र.कु. सुमन।